Baglamukhi Chaturakshar Mantra Evam Pooja Vidhi in Hindi

माँ बगलामुखी चतुरक्षर मंत्र एवं पूजा विधि

Sumit Girdharwal Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.info
www.yogeshwaranand.org

।। भगवती पीताम्बरा के चतुरक्षर मंत्र का महात्म्य ।।

भगवती बगलामुखी (पीताम्बरा) के इस मंत्र का अनुष्ठान बीज मंत्र (ह्ल्रीं) के अनुष्ठान के बाद किया जाता है ऐसा देखा गया है कि बीज मंत्र का

अनुष्ठान तो साधक बिना किसी समस्या के कर लेते हैं, लेकिन चतुरक्षर के अनुष्ठान में उन्हें थोड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है। समस्या से यहां तात्पर्य भगवती द्वारा ली जाने वाली परीक्षा से है। इस मंत्र में कई बार ऐसी परिस्थिति पैदा हो जाती है कि आपका अनुष्ठान बीच में ही छूट जाये, जैसे कहीं अचानक बाहर जाना पड़ जाये अथवा किसी काम में इतनी अधिक व्यस्तता हो जाये कि उस दिन के निर्धारित जप करने का समय ना मिले इत्यादि, लेकिन साधको को किसी भी परिस्थिति में किसी भी दिन जप नही छोड़ना है । यदि किसी कारण वश बाहर जाना भी पड़ भी जाये तो वही पर जाकर अपना जप पूर्ण करें एवं भगवती से क्षमा प्रार्थना करें । यदि आपने यह अनुष्ठान एक बार पूर्ण कर लिया तो भगवती की कृपा को प्राप्त करने से आपको कोई नही रोक सकता । भगवती पर विश्वास रखें एवं नियमित रूप से अपना जप करते रहें, आपको सफलता अवश्य मिलेगी ।

मन्त्र

ओम् आं ह्ल्रीं क्रों । (Om Aam Hlreem Krom)

विनियोग

ओम् अस्य श्री बगला चतुर्क्षरी मन्त्रस्य श्री ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री बगलामुखी देवता, ह्ल्रीं बीजं, आं शक्तिः, क्रों कीलकं, श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

ध्यान

कुटिलालक संयुक्तां मदाघूर्णित लोचनां,

मदिरामोद वदनां प्रवाल सदृशाधराम् ।।

सुवर्णकलश प्रख्य कठिन स्तन मण्डलां,

आवर्त्त विलसन्नाभिं सूक्ष्म-मध्यम संयुताम्।।

रम्भोरू पाद-पद्मां तां पीतवस्त्र समावृताम् ।

ऋष्यादिन्यासः-

- श्री ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
- गायत्री छंदसे नमः मुखे।
- श्री बगलामुखी देवताय नमः हृदि।
- ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये।
- आं शक्तये नमः पादयोः।
- क्रों कीलकाय नमः सर्वांगे।
- श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

षडंगन्यासः-

- ओम् ह्ल्रां हृदयाय नमः।
- ओम् ह्ल्रीं शिरसे स्वाहा।
- ओम् ह्ल्रूं शिखाय वषट्।
- ओम् ह्ल्रैं कवचाय हूं।
- ओम् ह्ल्रौं नेत्र त्रयाय वौषट्।
- ओम् ह्ल्रः अस्त्राय फट्।

करन्यासः

- ओम् ह्ल्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
- ओम् ह्ल्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
- ओम् ह्ल्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।
- ओम् ह्ल्रैं अनामिकाभ्यां हूं।
- ओम् ह्ल्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
- ओम् ह्ल्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

चतुरक्षर मंत्र का अनुष्ठान

जब साधक का एकाक्षरी मंत्र (बीज मंत्र - ह्लीं) का अनुष्ठान पूर्ण जो जाये तो उसके बाद गुरूदेव से चतुरक्षर मंत्र की दीक्षा लेनी चाहिए। चतुरक्षर मंत्र का अनुष्ठान भी एकाक्षर मंत्र के समान होता है किसी भी अनुष्ठान के ६ अंग होते हैं -

मंत्र दीक्षा एवं गुरू आज्ञा

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से मंत्र दीक्षा एवं आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से भी आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के उपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट कर आप माँ की कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

मंत्र जप

संकल्प लेकर चतुरक्षर मंत्र का एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला) की संख्या में हल्दी की माला पर जप करना चाहिए । यह जप आप 9,11,14,18,21,31,36,41 दिन में कर सकते हैं।

हवन

मंत्र जप के पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा 125 माला) से हवन अवश्य करना चाहिए, जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं उन्हे अपने गुरूदेव से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए । यदि 125 माला से हवन करने का सामर्थ्य ना हो (धन का अभाव हो) तो हवन के नाम की 125 माला का मंत्र जप कर लेना चाहिए एवं कुछ माला का हवन करवा लेना चाहिए ।

तर्पण

मंत्र जप करने के पश्चात (1250 मंत्रो अथवा 13 माला) से तर्पण करना चाहिए । तर्पण करने का मंत्र है "ओम् आं ह्ल्रीं क्रों तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र (बर्तन) ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर जल अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर " ओम् आं ह्ल्रीं क्रों तर्पयामि" बोलते हुए उसी पात्र में जल को

छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जाप उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर करना चाहिए एवं सीधे हाथ से तर्पण करना चाहिए । तर्पण के पश्चात इस जल को पौधों में डाल देना चाहिए ।

मार्जन

तर्पण के पश्चात (125 मंत्रो अथवा 2 माला) से मार्जन करना चाहिए । मार्जन करने का मंत्र है "ओम् आं ह्ल्रीं क्रों मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर "ओम् आं ह्ल्रीं क्रों मार्जयामि" बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए एव उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

कन्या अथवा ब्राहमण भोजन

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए ।

पूजा का क्रम

१. आसन पूजा, आचमन एवं शुद्धि-करण

२. गुरू पूजन

३. गणेंश पूजन (हरिद्रा गणपति पूजन)

४. **भैरव पूजन** - शक्ति की उपासना में भैरव पूजन का विशेष महत्व होता है माँ बगलामुखी के भैरव मृत्युंजय भैरव हैं इसलिए भगवती की उपासना से पहले भैरव जी से आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं जप के अन्त में दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र " हौं जूं सः " का जप अवश्य करना चाहिए ।

५. **ध्यान :** इसके पश्चात भगवती पीताम्बरा का ध्यान करें कि माँ आपके हृदय में सहस्रदल कमल के फूल पर विराजित हैं। माँ के चरणों का ध्यान करते हुए मन ही मन उनके चरणों में पीले पुष्प अर्पित करें एवं उनसे सदैव अपने हृदय में निवास करने की प्रार्थना करें ।

६. **माँ का पूजनः** ध्यान करने के पश्चात सामर्थ्यानुसार गंध (इत्र), धूप, दीप, पुष्प, ताम्बूल (पान) चन्दन आदि माँ को समर्पित करें ।

७. **कवचः** इसके पश्चात माँ के कवच का पाठ करें। कवच का पाठ आपको साधना में आने वाली सभी विपत्तियों से दूर रखता है। कवच के पाठ से माँ का सान्निध्य प्राप्त होता है

८. **मंत्र जप** - कवच के पाठ के बाद विनियोग, न्यासादि करें एवं उसके पश्चात अपने मंत्र का जप सुनिश्चित संख्या में करें ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

९. <u>अन्य स्तोत्र एवं पाठ</u> - मंत्र जप के पश्चात यदि समय हो तो भगवती के हृदय स्तोत्र, अष्टोत्तरशतनाम, सहस्रनाम आदि का पाठ करना चाहिए ।

१०. <u>मृत्युंजय भैरव मंत्र</u> - अन्त में दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र " हौं जूं सः " का जप अवश्य करना चाहिए ।

११. <u>क्षमा याचना एवं जप समर्पण</u> - अन्त में माँ से क्षमा याचना करें । अपने सीधे हाथ में थोड़ा जल लेकर अपने द्वारा किये गये सभी मंत्र जप को माँ के बायें हाथ में समर्पित करें एवं जल को माँ के बायें हाथ में अथवा बगलामुखी यंत्र पर चढा दें ।

१२. अन्त में माँ को प्रणाम करते हुए अपने आसन के नीचे जल डालकर अपने माथे से लगायें एवं बायें पैर को पहले पृथ्वी पर रखते हुए बाद में दायें पैर को पृथ्वी पर रखें ।

१३. साधना करने के बाद कम से कम आधा घण्टे तक मौन अवश्य रखना चाहिए । इससे साधक का तप क्षीण नही होता ।

१४. अपने आसन एवं माला को किसी भी व्यक्ति को छूने नही देना चाहिए चूँकि इन दोनो में साधक की आध्यात्मिक उर्जा छुपी होती है ।

१५. एक साधक को कभी भी किसी की निन्दा नही करनी चाहिए और ना ही कभी अंहकार करना चाहिए । ये दोनो साधक को दैवीय कृपा से दूर करते हैं और साधक की सारी उर्जा का नाश कर देतें हैं

१६. साधकों को मेरा एक परामर्श और भी है कि वे जब भी माँ पीताम्बरा अथवा किसी अन्य के मंत्रों का जप करें तो उनके समक्ष अपनी कोई लालसा या इच्छा व्यक्त न करें। वे आद्याशक्ति हैं, सम्पूर्ण सृष्टि की अधिष्ठात्री हैं, उनसे किसी भी साधक के मन की इच्छा छुपी हुई नहीं है। अतः अपनी इच्छा व्यक्त करके स्वयं को हल्का बनाना है। जब साधक अपनी कोई इच्छा लेकर माँ के मंत्रों का जप करता है और संकल्प लेता है कि अपने अमुक कार्य की पूर्णता के लिए मैं अमुक देवी या देवता के इतनी संख्या में जप करूंगा और उसका वह कार्य पूर्ण हो जाता है तो माँ की कृपा भी वंही समाप्त हो जाती है। आपने किसी कार्य की सफलता अथवा किसी भी प्रकार की प्राप्ति के लिए किसी भी देवी अथवा देवता के एक निश्चित संख्या में जप करने का संकल्प लिया और आपका कार्य पूर्ण हो गया तो फिर भगवती या देवता से आपको कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता है। क्योंकि यह एक मात्र विनिमय है, आदान-प्रदान है। एक ऐसा विनिमय जो दो व्यक्तियों के मध्य परस्पर होता है। आपने किसी को कुछ दिया उसने बदले में आपका कार्य कर दिया। इसके उपरान्त कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध किसी प्रकार का नहीं रह जाता । आपको चाहिए कि आप जिस भी देवी-देवता का मंत्र जप करते हैं तो उसे केवल आप अपने देवता की प्रसन्नता के लिए कीजिए। यदि

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

आपके मंत्र जप से आपका देवी-देवता प्रसन्न हो जाता है तो आपकी समस्त इच्छाएं आपके बिना व्यक्त किये ही पूर्ण हो जायेंगीं और अपने देवी-देवता से आपके सम्बन्ध भी प्रगाढ बने रहेगें। अतः आपको चाहिए कि उनसे एकत्व करने का प्रयास करें न कि कुछ मांगने का। यदि आप ऐसा करते हैं तो मेरा वचन है कि आपकी प्रत्येक साधना पूर्णता को प्राप्त करेगी।

प्रारम्भिक पूजा के मंत्र एवं विधि

भगवती की साधना करने का विशिष्ट समय रात्रिकाल माना गया है इसलिए यदि हो सके तो रात्रि ९ बजे से २ बजे के बीच ही अपनी साधना करनी चाहिए । लेकिन यदि ऐसा सम्भव न हो सके तो अपने समय की स्थिति के अनुसार समय निर्धारण कर लेना चाहिए, क्योंकि कुछ ना करने से अच्छा कुछ कर लेना है।

यह साधना घर में रहकर ही सम्पन्न की जा सकती है। साधना का स्थान शान्त एवं मनोरम होना चाहिए । साधना में बैठने से पूर्व स्नान कर लें यदि सम्भव ना हो तो हाथ-पैर धो सकते हैं। इस प्रकार बाह्य रूप से अपने आप को पवित्र कर लें। फिर पीले रंग का आसन बिछायें और स्वयं भी पीले वस्त्र धारण करें ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

इसके उपरान्त आसन पर बैठ जायें और मानसिक शुद्धि के लिए निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें। अपने शरीर पर थोड़ा सा जल छिड़कें-

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

अतिनील घनश्यामं नलिनायतलोचनम् ।

स्मरामि पुण्डरीकाक्षं तेन स्नातो भवाम्यहम् ।।

इसके पश्चात आचमन करें ।

सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें

ओम् केशवाय नमः ।

पुनः सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें

ओम् नाराणाय नमः ।

पुनः सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें

ओम् माधवाय नमः ।

यह मन्त्र पढ़ते हुए हाथ धो लें ।

ओम् हृषीकेशाय नमः ।

इसके पश्चात आसन के नीचे हल्दी से एक त्रिकोण बनायें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए प्रणाम करें-

ओम् कामरूपाय नमः।

इसके पश्चात अपने आसन पर थोड़ा सा जल छिड़कें और निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें-

ओम् पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां नित्यं ! पवित्रं कुरू चासनम् ।।

यह मन्त्र पढ़ते हुए आसन को प्रणाम करें-

क्लीं आधार शक्त्यै कमलासनाय नमः।

इसके पश्चात थोड़ी पीली सरसो लें एवं निम्नलिखित मंत्र पढते हुए अपने चारो और फेंक दें । यह आपका रक्षा कवच बन जायेगा और कोई भी बाह्य शक्ति आपकी पूजा में विघ्न नही डाल पायेगी ।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञा ।।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः र्सवतो दिशः ।

सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ।।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

इसके पश्चात दीपक प्रज्जवलित करें एवं निम्नलिखित मंत्र पढें -

भो दीप देवीरूपस्तवं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत ।

यावत् कर्म समाप्ति स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ।।

इसके बाद मूल मंत्र से १:८:४ के अनुपात से अनुलोम-विलोम प्राणायाम करें। अर्थात् एक मूल मंत्र से पूरक, आठ मंत्रों से कुम्भक तथा चार मंत्रों से रेचक करें। यह क्रिया जितनी अधिक से अधिक की जा सके, उतना ही अच्छा है।

अब अपने गुरू का ध्यान करते हुए उनकी वन्दना करें-

अखण्ड मण्डलाकारं व्यापतं येन चराचरम् ।

तत पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाक्या ।

चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

देवतायाः दर्शनं च करूणा वरूणालयं ।

सर्व सिध्दि प्रदातारं श्री गुरूं प्रणमाम्यहम् ।।

वराभय कर नित्यं श्वेत पद्म निवासिनं ।

महाभय निहन्तारं गुरू देवं नमाम्यहम् ।।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

इसके उपरांत श्रीनाथ, गणपति, भैरव आदि का ध्यान करके उन्हें नमन करें, क्योंकि इनकी कृपा के अभाव में कोई भी साधना पूर्ण नहीं होती है-

श्री नाथादि गुरू त्रयं गणपतिं पीठ त्रयं भैरवं,

सिद्धौघं बटुक त्रयं पदयुगं दूतिक्रमं मण्डलम्।

वीरान्द्वयष्ट चतुष्कषष्टिनवकं वीरावली पंचकम्,

श्रीमन्मालिनि मंत्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।।

वन्दे गुरूपद-द्वन्द्ववांग-मन-सगोचरम्,

रक्त शुक्ल-प्रभा-मिश्रं-तर्क्यं त्रैपुरं महः !

गुरूदेव का ध्यान करने के उपरान्त निम्नांकित मंत्रों से देवी-देवताओं को नमस्कार करें-

ओम् श्री गुरूवे नमः ।

ओम् क्षं क्षेत्रपालाय नमः ।

ओम वास्तु पुरूषाय नमः ।

ओम् विघ्न राजाय नमः ।

ओम् दुर्गाय नमः ।

ओम् विघ्न राजाय नमः ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

ओम शम्भु शिवाय नमः ।

ओम् भैरवाय नमः ।

ओम् बटुकायै नमः ।

ओम् ब्रह्मायै नमः ।

ओम् नैर्ऋतियै नमः ।

ओम् चक्रपाणायै नमः ।

ओम् विघ्न नाथायै नमः ।

ओम् ऋष्यै नमः ।

ओम् देवतायै नमः ।

ओम् वेद शास्त्रायै नमः ।

ओम् वेदार्थाय नमः ।

ओम् पुराणायै नमः ।

ओम् ब्राह्मणायै नमः ।

ओम् योगिन्यौ नमः ।

ओम् दिक्पालायै नमः ।

ओम् सिद्धपीठायै नमः ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

ओम् तीर्थायै नमः ।

ओम् मंत्र-तंत्र-यंत्रायै नमः ।

ओम् मातृकायै नमः ।

ओम् पंचभूतायै नमः ।

ओम् महाभूतायै नमः ।

ओम् सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

ओम् सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः ।

ओम् सर्वेभ्यो ऋषिभ्यो नमः ।

इसके पश्चात भैरव जी से भगवती की आराधना करने की अनुमति लें-

तीक्ष्णदन्त महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।

भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

अब दस बार मुखशोधन मंत्र ऐं ह्रीं ऐं का जाप करें

इसके पश्चात बगलामुखी कुल्लुका ओम् हूं क्ष्रौं (Om Hoom Chraum)
का दस बार सिर पर जाप करें ।

उपरोक्त दी गयी पूजा प्रारिम्भक पूजा है इसके बाद भगवती का ध्यान,
विनियोग मंत्र जप आदि करना चाहिए । जिन साधको को संस्कृत का

कम ज्ञान है एवं जिन्हे उपरोक्त दी गयी विधि कठिन प्रतीत होती है वो नीचे दी गयी विधि का प्रयोग करें -
आसन पर बैठकर अपने गुरूदेव का ध्यान करें, इसके बाद गणेश जी का ध्यान करे, इसके बाद भैरव जी से भगवती की पूजा की आज्ञा लेकर भगवती का ध्यान करें, फिर मंत्र का विनियोग कर न्यास करें एवं मंत्र जप करें । मंत्र जप के बाद दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र " हौं जूं सः " का जप अवश्य करें । अन्त में अपनी सम्पूर्ण पूजा भगवती को समर्पित कर आसन से उठ जायें ।

जिन साधको ने अभी तक बीज मंत्र का जप नही किया है पहले वो भगवती के बीज मंत्र की साधना करें । बीज मंत्र की साधना नीचे दे रहा हूं ।

।। भगवती पीताम्बरा के एकाक्षरी मंत्र का महात्म्य ।।

भगवती बगलामुखी (पीताम्बरा) के इस मंत्र को महामंत्र के नाम से जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि भगवती बगलामुखी की उपासना करने वाले साधक के सभी कार्य बिन कहे ही पूर्ण हो जाते हैं और जीवन की हर बाधा को वो हंसते हंसते पार कर जाते हैं मैनें स्वयं अपने जीवन में अनेको चमत्कार देखें हैं, जिनको सुनकर कोई भी यकीन नही करेगा लेकिन भगवती पीताम्बरा अपने भक्तों के उपर ऐसे ही कृपा करती हैं एकाक्षरी मंत्र माँ पीताम्बरा का बीज मंत्र है, इसके जप के बिना माँ पीताम्बरा की

साधना नही होती । माँ पीताम्बरा की साधना इसी बीज मंत्र से प्रारम्भ होती है, एवं मेरी साधको को परामर्श है कि बीज मंत्र का नियमित रूप से कम से कम २१ माला का जप अवश्य करना चाहिए, क्योंकि बीज में ही मंत्र ही देवता के प्राण होते हैं जिस प्रकार बीज के बिना वृक्ष की कल्पना नही की जा सकती उसी तरह बीज मंत्र के जप के बिना साधना में सफलता के बारे में सोचना भी व्यर्थ है। भगवती की सेवा केवल मंत्र जप से ही नही होती है बल्कि उनके नाम का गुणगान करने से भी होती है । जिस प्रकार नारद ऋषि हर पल भगवान विष्णु का नाम जपते थे, उसी प्रकार सुधी साधको को माँ पीताम्बरा का नाम जप हर पल करना चाहिए एवं अन्य लोगो को भी उनके नाम की महिमा के बारे में बताना चाहिए । मैंने अपने जीवन का केवल एक ही उद्देश्य बनाया है कि माँ पीताम्बरा के नाम को हर व्यक्ति तक पहुंचाना है। आप सब भी यदि माँ की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं तो आज से ही भगवती के एकाक्षरी मंत्र को अपने जीवन में उतार लीजिए एवं माँ के नाम एवं उनकी महिमा का अधिक से अधिक प्रचार करना शुरू कर दीजिए। साधको के हितार्थ भगवती के बीज मंत्र की जानकारी यहां दे रहा हूँ, भगवती पीताम्बरा आप सब पर कृपा करें ।

ध्यान

वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति।

क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति।।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

गर्वी खवर्ति सर्व विच्च जडति त्वद्‍यन्त्राणा यंत्रितः।

श्रीनित्ये बगलामुखि! प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः।।

मंत्र - ह्ल्रीं (Hlreem)

विनियोगः-

ओम् अस्य एकाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, बगलामुखी देवताः, लं बीजं, ह्रीं शक्ति, ईं कीलकं, मम सर्वार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-

- ओम् ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
- गायत्री छंदसे नमः मुखे।
- श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि।
- लं बीजाय नमः गुह्ये।
- ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
- ईं कीलकाय नमः सर्वांगे।
- श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

षडंगन्यासः

- ओम् ह्लां हृदयाय नमः।
- ओम् ह्लीं शिरसे स्वाहा।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

- ओम् ह्लूं शिखायै वषट्।
- ओम् ह्लैं कवचाय हूं।
- ओम् ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
- ओम् ह्लः अस्त्राय फट्।

करन्यासः

- ओम ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
- ओम ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
- ओम ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्।
- ओम ह्लैं अनामिकाभ्यां हूं।
- ओम ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
- ओम ह्लः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

बीज मंत्र का अनुष्ठान

एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला) की संख्या में हल्दी की माला पर जप करना चाहिए । उसके पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा 125 माला) से हवन अवश्य करना चाहिए, क्योंकि हवन से देवता को शक्ति मिलती है और मैंने स्वयं इसका अनुभव किया है कि हवन से माँ की कृपा बहुत जल्दी मिलती है। इसलिए हवन से बढकर कुछ नही है। यदि हो सके तो हवन नियमित रूप से करना चाहिए । जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं

उन्हे अपने गुरू से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए इसके पश्चात (1250 मंत्रो अथवा 13 माला) से तर्पण करना चाहिए ।

तर्पण करने का मंत्र है "हल्रीं तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर जल अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर "हल्रीं तर्पयामि" बोलते हुए उसी पात्र में जल को छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जाप उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर करना चाहिए एवं सीधे हाथ से तर्पण करना चाहिए ।
तर्पण के पश्चात (125 मंत्रो अथवा 2 माला) से मार्जन करना चाहिए । मार्जन करने का मंत्र है "हल्रीं मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर "हल्रीं मार्जयामि" बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए एव उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए ।

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के उपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट

कर आप माँ की कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते। यदि आपके गुरू नही हैं तो “ओम् पीताम्बरायै नमः” मंत्र का हल्दी की माला पर नियमित रूप से जप करें एवं माँ से गुरू प्राप्ति के लिए आग्रह करें ।

Devi Baglamukhi Hridaya Mantra

।। श्रीबगलामुखीहृदयमंत्र ।।

हृदय मंत्र को देवता का हृदय कहा जाता है इसके जप से देवता का सानिध्य बढ़ता है एवं सिद्ध होने पर दर्शन प्राप्त होते हैं अपने गुरूदेव से इस मंत्र की दीक्षा लेकर ही इसका जप करें । कई बार ऐसा देखा गया है कि कुछ लोग साधना के प्रारम्भ में ही हृदय मंत्र का जप शुरू कर देते है और जैसे ही देवता का सानिध्य बढ़ता है तो घबरा जाते है और डर से अपनी साधना बीच में ही छोड़ देतें है इसलिए साधको को मेरा परामर्श है कि जब आपके गुरूदेव कहें तभी इसका जप करें । नये साधको को इसके स्थान पर बगलामुखी हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीबगलामुखीहृदयमंत्रस्य नारदः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, हल्रीं बीजम्, क्लीं शक्तिः, ऐं कीलकम्, श्रीबगलामुखी प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

ॐ नारदऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे । श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदि । हल्रीं बीजाय नमः गुह्ये । क्लीं शक्तये नमः पादयोः । ऐं कीलकाय नमः सर्वांगें

करन्यास

ॐ हल्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । क्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।ऐं मध्यमाभ्यां वषट् । हल्रीं अनामिकाभ्यां हुम् । क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ऐं अस्त्राय फट् ।

हृदयादिन्यास-

ॐ हल्रीं हृदयाय नमः । क्लीं शिरसे स्वाहा । ऐं शिखायै वषट् । हल्रीं कवचाय हुम् ।क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ऐं अस्त्राय फट्

।।ध्यानम्।।

बालभानुप्रतीकाशां नीलकोमलकुन्तलाम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं स्तम्भनास्त्ररुपिणीम् ।।

मंत्र- आं हल्रीं क्रों ग्लौं हुं ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं बगलामुखी ! आवेशय आवेशय, आं हल्रीं क्रों ब्रह्मास्त्ररुपिणी ! एहि एहि आं हल्रीं क्रों मम हृदये आवाहय आवाहय, सान्निध्यं कुरु कुरु आं हल्रीं क्रों ममैव हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ, आं हल्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

Mantra : Aam Hlreem Krom Glaum Hoom Aim Kleem Shreem Hreem Baglamukhi ! Aaveshaya Aaveshaya, Aam Hlreem Krom BrahmastraRupini ! Aehi Aehi Aam Hlreem Krom Mama Hridaye Aavahaya Avahaya, Saanidhyam Kuru Kuru Aam Hlreem Krom Mameva Hridaye Chiram Tishth Tishth, Aam Hlreem Krom Hoom Phat Swaha

प्रयोग- इस मंत्र का प्रयोग किसी विशेष परिस्थिति में ही करना चाहिए क्योंकि यह बहुत ही अधिक ही तीव्र है। मंत्र प्रयोग के बाद बगला गायत्री एवं मूल मंत्र का अनुष्ठान देवी की प्रसन्नता के लिए अवश्य करना चाहिए ।

सांख्यायनतंत्र में इस दुर्लभ मंत्र की प्रशंसा करते हुए कहा है कि इसके स्मरण मात्र से महादरिद्र व्यक्ति भी लक्ष्मीवान् हो जाता है, जड़ व्यक्ति पण्डित हो जाता है, चोर भी बुद्धिमान बन जाता है एवं निन्दित मनुष्य भी कीर्तिवान् हो जाता है। शत्रु पर इस मंत्र का प्रयोग करने से साधक का प्रतिष्ठावान् शत्रु भी समाज में उपहास व असम्मान का पात्र बनता है। इस मंत्र की साधना जापक को समस्त प्रकार से संतुष्ट रखती है। आस्थापूर्वक निरन्तर जप करने से जापक को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

- मंत्र को सिद्ध करने के पश्चात् उक्त मंत्र से बंध्या स्त्री के गर्भांग का मार्जन करने से छह मास की अवधि में गर्भधारण करके पुत्र को जन्म

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

देती है। इसके साथ में बगला कवच से अभिमंत्रित जल स्त्री को देना चाहिए ।

- सूर्यादय के समय बगलाहृदय मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित दूध पीने से छह मास के भीतर बन्ध्या भी पुत्र को जन्म देती है।
- शत्रु के अभिचारिक प्रयोग के कारण कोई भयानक रोग, व्याधि या महाभय उत्पन्न होने पर इस अमोघ मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित जल पीने से तुरन्त रोग या महाभय से छुटकारा मिलता है।

....

हमारे शास्त्रों में करोड़ो मंत्र हैं लेकिन हर मंत्र आपके लिए सही नही है। शिष्य के लिए कौन सा मंत्र सही है इसका निर्णय केवल गुरू ही कर सकता है। इसलिए आप केवल अपने आप को गुरू को समर्पित कर दीजिए, इसके बाद गुरू स्वयं आपको सही राह दिखायेगा।

यदि आपको हमारे द्वारा लिखे गये लेख पंसद है तो कृपया हमें अपनी ईमेल आईडी अवश्य भेजें । उसके पश्चात हमारे द्वारा लिखे सभी लेख हम आपको सीधे आपकी ईमेल पर ही भेज देंगें। हमारा ईमेल है –

sumitgirdharwal@yahoo.com

People, who are unable to read the Hindi or Sanskrit & want to read our articles, please send your request for the English translation with the article name & its link to sumitgirdharwal@yahoo.com. Based on the number of request for the particular article we will try to translate it into English as soon as possible.

Our Books

1. **Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**
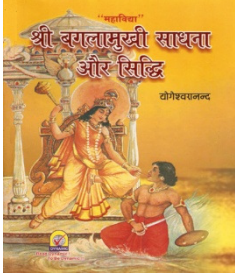
2. **Mantra Sadhana**
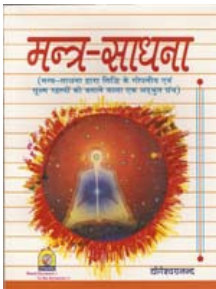
Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)
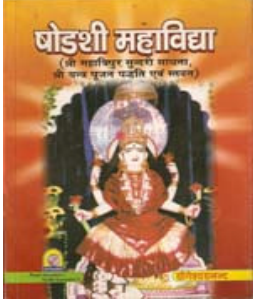
4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

श्री बगलामुखी साधना रहस्य का प्रकाशन जल्द ही किया जा रहा है। यह पुस्तक लगभग ७०० पृष्ठ की है जिसमें मां पीताम्बरा की साधना की पूर्ण विधि दी गयी है। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए Rs 680/= नीचे लिखे अकाउण्ट में जमा करायें

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094

Support & Feedback

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content regarding Das Mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. We need your support to complete this task

Requirement -

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Font chanakya) or Microsoft Office (Font Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org